Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 10 ~ Issue 12 (2022) pp: 484-488
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

• हिंदू आतंक: प्रामाणिकता और वास्तविकता पर पुनर्विचार ।

धीरजसाव, एम.ए. ,
राजनीति विज्ञान विभाग, काजी नजरूल विश्वविद्यालय, आसनसोल, भारत ।

***R**eceived 12 Dec., 2022; **R**evised 24 Dec., 2022; **A**ccepted 26 Dec., 2022 © The author(s) 2022.*
P**ublished with open access at **www.questjournals.org

भूमिका :

कई वर्षों से, यह धारणा रही है कि "हिंदू आतंकवाद" ने देश में मुसलमानों, ईसाइयों और अन्य अल्पसंख्यकों के अस्तित्व को खतरे में डाल दिया है। जब कांग्रेस के नेतृत्व वाली यूएपीए सरकारें एक और दो सत्ता में थीं, तो इस अवधारणा को एक नाम दिया गया था - "ओचर टेरर"। हम कल्पना नहीं कर सकते कि हिंदू आतंकवादी गतिविधियों में शामिल हो सकते हैं। क्योंकि, जब हम आतंकवाद शब्द सुनते हैं, तो हमारे आरोप की उंगली हमेशा अल्पसंख्यक मुसलमानों की ओर जाती है। दुनिया में जहां कहीं भी आतंकवाद का हमला होता है, इस्लाम के अनुयायियों को मेज पर ले जाया जाता है! लेकिन हमारी अज्ञानता का फायदा उठाकर, हमारी अज्ञानता में आतंकवाद का एक और भयानक रूप सावधानी से पोषित किया जा रहा है: हिंदू आतंकवाद। विभिन्न हिंदुत्ववादी उग्रवादी संगठन और उनके सदस्य-समर्थक विनाश में लिप्त हैं।

उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान, हिंदू शब्द का कोई विशिष्ट धार्मिक अर्थ नहीं था। केवल सिंधु नदी के पूर्व में रहने वाले लोगों का मतलब था, बाद में भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने पुष्टि की कि हिंदू और हिंदुत्व की शर्तों को किसी विशिष्ट अर्थ के साथ बातचीत नहीं की जा सकती है। यह तभी हुआ जब 1871 में ब्रिटिश औपनिवेशिक अधिकारियों द्वारा शुरू की गई जनगणना में हिंदू को धार्मिक पदनाम के रूप में शामिल किया गया था। तब बड़ी संख्या में हिंदू अपने आप को भारतीय और अपने देश को हिंदू मानने लगे। हिंदू राष्ट्रवादी भारत को बहुसंख्यक देश के रूप में देखते हैं, बहुत कुछ इजरायल या पाकिस्तान की तरह। इसके विपरीत, वे महसूस करते हैं कि भारत की महान विविधता भारत की मुख्य ताकत है।

• बीज शब्द : हिंदू आतंकवाद, हिंदुत्व उग्रवादी, हिंदू धर्म, धर्मांतरण, आतंकवाद और धर्मम।

• डेटा संग्रह और कार्यप्रणाली :

यह अध्ययन पूरी तरह से डेटा के द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है जो रजिस्ट्रार जर्नल, बुक्स न्यूजपेपर्स, एसेज, इंटरव्यू कन्वर्सेशन मैगजीन और रिसर्च पेपर्स से एकत्र किए गए डेटा से एकत्र किए जाते हैं। द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त जानकारी कई मामलों में बदल जाती है और सही जानकारी बदल जाती है इसलिए इस जानकारी का मूल्य सीमित होता है। यहां मात्रात्मक परिप्रेक्ष्य में मात्रात्मक है ,मात्रात्मक का उपयोग किया जाता है यानी जहां प्रश्न का उत्तर पूर्व निर्धारित होता है और उत्तरदाता संख्याएं बहुत होती हैं ।

• मुख्य चर्चा :

पिछले सात दशकों में से अधिकांश के लिए, पूरे देश में धर्मनिरपेक्षता देखी गई। लेकिन अब भगवाधारी हिंदू धर्म मजबूत होता जा रहा है। ब्रिटिश विरोधी आंदोलन ने न केवल धर्मनिरपेक्ष और समाजवादी कांग्रेस आंदोलन को बल्कि एक प्रतिद्वंद्वी हिंदू राष्ट्रवादी आंदोलन को भी जन्म दिया, जिसे सामूहिक रूप से संघ परिवार के रूप में जाना जाता है। परिवार "हिंदुत्व" की एक विचारधारा को बढ़ावा देता है, जिसका उद्देश्य भारतीय समाज, राजनीति और संस्कृति में हिंदू धर्म की सर्वोच्चता सुनिश्चित करना है, जिसे वह हिंसा और आतंक सहित रणनीति के माध्यम से बढ़ावा देता है। इसके एजेंडे में मुसलमानों और ईसाइयों का निष्कासन शामिल है। संघ परिवार का मुख्य संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) है। 1925 में केशव हेडगेवार द्वारा स्थापित, जो वीडी सावरकर से प्रभावित थे, जो मानते थे कि हिंदू प्राचीन आर्यो के वंशज थे। सावरकर की 1923 की किताब हिंदुत्व हिंदू कौन है? वर्णित किया कि जो लोग भारत को पितृभूमि और पवित्र भूमि के रूप में नहीं मानते थे, वे सच्चे भारतीय नहीं थे और भारत के लिए भारतीय ईसाइयों और मुसलमानों का प्यार "विभाजित" था क्योंकि मध्य पूर्व में प्रत्येक समूह की अपनी पवित्र भूमि थी। बाद में, एमएस गोलवलकर ने इस बात पर जोर दिया कि गैर-हिंदुओं को या तो हिंदू संस्कृति और भाषा को अपनाना चाहिए, हिंदू धर्म का सम्मान करना और सम्मान करना सीखना चाहिए या देश में हिंदू राष्ट्र के पूर्ण अधीनस्थ के रूप में रहना चाहिए, कुछ भी दावा नहीं करना चाहिए, किसी भी विशेषाधिकार का हकदार नहीं होना चाहिए। 25 मार्च 1939 को, आरएसएस से संबद्ध हिंदू राष्ट्रवादी हिंदू महासभा पार्टी ने भी आर्य संस्कृति, वैदिक शिक्षा और उसके संरक्षण के पुनरुद्धार की घोषणा की। एक बिंदु पर गोलवलकर ने गांधी को मुसलमानों के समर्थक के रूप में निंदा की, जबकि गांधी ने आरएसएस को "सांप्रदायिक संगठन" कहा। हिंदू राष्ट्रवादियों ने गांधी पर उपमहाद्वीप को भारत और पाकिस्तान में विभाजित करने का आरोप लगाया और उन पर भारत माता को तोड़ने का आरोप लगाया। अंत में गांधी का हत्यारा सामने आया। नाथूराम गोडसे आरएसएस के पूर्व सदस्य और सावरकर के सहयोगी थे।

आरवीएस मणि के मुताबिक, देश में हिंदू आतंकवाद का सबसे बड़ा प्रमोटर कोई और नहीं बल्कि पूर्व केंद्रीय गृह मंत्री पी चिदंबरम हैं। उनके कार्यकाल के दौरान उन्हें गृह मंत्रालय के आंतरिक सुरक्षा विभाग के अधिकारियों द्वारा हिंदू आतंकवाद के सिद्धांत के विपरीत सब कुछ करने का अवसर मिला। बिना उचित प्रक्रिया का पालन किए भी एनआईए के दो डीजी को आंतरिक सुरक्षा विभाग में लाया गया। उन्होंने कहा, उस समय एनआईए कैसे एक व्यक्ति के राजनीतिक हित के लिए काम करने में व्यस्त थी? यही कारण है कि अपने मालिक के कहने पर एनआईए ने अस्तित्वहीन हिंदू आतंकवाद पैदा किया है। फिर वहीं से देशभर में हिंदू आतंकवाद को लेकर सोची-समझी चर्चा हुई। हाल ही में इतिहासकार और टीकाकार रामचंद्र गुहा ने तर्क दिया है कि 'हिंदू कट्टरवाद' भारत के लिए 'इस्लामिक आतंकवाद' से बड़ा खतरा है। गुहा के ऐसा कहने का कारण यह है कि हिंदू भारत की आबादी का एक बड़ा हिस्सा हैं और इसलिए उनके रैंक के कट्टरपंथी एक बड़ा खतरा पैदा करते हैं। हालांकि, उन्होंने अपनी थीसिस के समर्थन में कोई तथ्य या कोई गंभीर सबूत पेश नहीं किया है।

*Corresponding Author: धीरजसाव, एम.ए. ,

RSS अब लाखों सदस्यों वाला एक बड़ा संगठन है। इसकी शाखा विद्या भारती में एक लाख शिक्षकों के साथ लगभग बीस हजार शिक्षण संस्थान हैं। विद्या भारती स्कूल भारत के नक्शे के साथ पुस्तिकाएं वितरित करते हैं जिसमें न केवल पाकिस्तान और बांग्लादेश बल्कि भूटान, नेपाल, वियतनाम और म्यांमार के सभी क्षेत्र शामिल हैं। , सभी "पुण्यभूमि भारत" "भारत की पवित्र भूमि" शीर्षक के तहत। "आरएसएस आदिवासी लोगों, बुद्धिजीवियों, शिक्षकों, झुग्गी-झोपड़ी में रहने वालों, कोढ़ी, समरस, उपभोक्ताओं, समाचार पत्रों, उद्योगपतियों, सिखों, पूर्व सैनिकों, प्रवासी भारतीयों और धर्म और धर्मांतरण के लिए एक संगठन, साथ ही ट्रेड यूनियनों के लिए एक अलग संगठन है। , छात्र और आर्थिक संगठन और बजरंग दल और विष्णु हिंदू परिषद, विहिप विश्व हिंदू परिषद जैसे संघ परिवार संगठन भी हैं, जो शातिर घृणा अभियान चलाते हैं और कभी-कभी धार्मिक अल्पसंख्यकों के खिलाफ हिंसा में शामिल होते हैं। डीएचसी का गठन 1964 में किया गया था। 1992 के राष्ट्रव्यापी विरोध का आयोजन किया, जिसका समापन हिंदू जनता द्वारा अयोध्या में बाबरी मस्जिद के विनाश में हुआ।

भारतीय जनता पार्टी, जिसने 1998 से मध्यमार्गी दलों के गठबंधन का नेतृत्व करके भारत की राष्ट्रीय सरकार बनाई है, आरएसएस, टीएचआई और बजरंग दल से संबद्ध है और संघ परिवार की राजनीतिक शाखा के रूप में कार्य करती है। प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी, जिन्होंने सार्वजनिक रूप से आरएसएस की प्रशंसा की, ने इसके कार्यक्रमों में भाग लिया और भर के आवास पर संगठन के नेतृत्व का अभिनंदन किया। भाजपा राष्ट्रीय स्तर पर प्रचार कर रही है, सांस्कृतिक संस्थानों में हेरफेर कर रही है, धार्मिक अल्पसंख्यकों की रक्षा कर रही है, कानूनों में ढील दे रही है, और हिंदू चरमपंथी हिंसा को कम कर रही है या उसकी निंदा कर रही है, तो वह हिंदुत्व के आदर्शों को आगे बढ़ा रही है। भाजपा सांसदों ने अंतरराष्ट्रीय संपर्कों को सीमित करने और अल्पसंख्यक धार्मिक समूहों के अधिकारों में कटौती करने की भी कोशिश की है। इसने धर्मांतरण विरोधी कानूनों को निरस्त करने और विवाह, गोद लेने और विरासत को नियंत्रित करने वाले व्यक्तिगत कानूनों को बदलने का काम किया। यह दलितों के खिलाफ कानूनी भेदभाव करता है जो ईसाई और मुस्लिम हैं, लेकिन उनके खिलाफ नहीं जो हिंदू हैं। भाजपा समर्थित राज्यों तमिलनाडु और गुजरात ने हाल ही में हिंदुओं की धर्म परिवर्तन की क्षमता को सीमित करने वाले कानून पारित किए हैं, और राष्ट्रीय प्रतिबंध प्रस्तावित किए गए हैं।

हालाँकि, भारत में धर्म की कानूनी स्थिति स्पष्ट नहीं है। 1977 के एक फैसले में, सुप्रीम कोर्ट ने फैसला सुनाया कि "रूपांतरण" एक मौलिक अधिकार नहीं है, कि धर्मांतरण अंतरात्मा की स्वतंत्रता को ठेस पहुंचा सकता है, और यदि धर्मांतरण सामुदायिक जीवन को बाधित करता है, तो वे "सार्वजनिक व्यवस्था को बाधित" कर सकते हैं। गुजरात, मध्य प्रदेश, ओडिशा, जमीलनाडु और अरुणाचल प्रदेश में "जबरन धर्मांतरण" पर कानूनी प्रतिबंध है। अल्पसंख्यकों की सुरक्षा के लिए एक सरकारी निकाय,

*Corresponding Author: धीरजसाव, एम.ए. ,

राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग के अधिकारियों का मानना है कि ऐसे कानून असंवैधानिक हैं और कई आरोपों के बावजूद, कोई भी "जबरन धर्मांतरण" साबित नहीं हुआ है। इसके अलावा, हिंदू चरमपंथियों का दूसरा मुख्य लक्ष्य मुस्लिम समुदाय है, जिसने भारत की आजादी के बाद से हजारों मुसलमानों और हिंदुओं की जान ले ली है। फरवरी 2002 में गुजरात में हिंसा के प्रकोप के दौरान, पुलिस और निजप राज्य सरकार के अधिकारी या तो साथ खड़े थे या इसमें शामिल हो गए थे जब कई मुसलमानों को जिंदा जला दिया गया था या उनके टुकड़े-टुकड़े कर दिए गए थे। इस संदर्भ में, हिंसक हिंदू राष्ट्रवाद के उदय से भारत की सहिष्णु परंपराओं और ब्राह्मणवादी लोकतंत्र को खतरा है। हालांकि, यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि यूपीए सरकार अपने दोनों कार्यकालों के दौरान देश को बदनाम करने की साजिशों में शामिल थी। पी चिदंबरम, जो इस सरकार में सबसे शक्तिशाली मंत्री थे, और सोनिया और राहुल गांधी एक करीबी नेता दिग्विजय सिंह ने देश में हिंदू आतंक के बीज बोए और फिर खाद और पानी दिया। उन्होंने इस काम में देश के कई अधिकारियों को भी शामिल किया। उनकी गतिविधियों से देश की जांच एजेंसियां अछूती नहीं रहीं।

• निष्कर्ष :

दरअसल आतंकियों का कोई धर्म नहीं होता। आतंकवाद उसका धर्म है। हिंदू आतंकवादी मुस्लिम आतंकवादियों की तरह ही घृणित हैं। कोई भी जन्म से हिंदू, मुस्लिम, सिख या ईसाई हो सकता है, लेकिन कोई भी धर्म आतंकवाद को वैध या पनाह नहीं देता है, और न ही निर्दोष लोगों की हत्या और राज्य के खिलाफ तोडफोड करता है। हिंदू समूहों द्वारा आतंकवादी हमलों की वास्तविकता धीरे-धीरे भारतीयों के मन में दर्ज हो रही है, हालांकि इन प्रतिष्ठित संरचनाओं को संभावित नुकसान की सीमा बहस का विषय है। प्राप्त जानकारी के अनुसार अभिनव भारत -आधुनिक भारत और एक अन्य सनातन संस्था 'अनन्त संस्था' जैसे हिंदू आतंकवादी समूहों से जुड़े व्यक्तियों ने देश भर में विभिन्न स्थानों पर विस्फोट किए हैं। इनमें महाराष्ट्र के मालेगांव में 2006 और 2008 में हुए दो विस्फोट उल्लेखनीय हैं; 2007 में हरियाणा में भारत और पाकिस्तान के बीच चलने वाली ट्रेन को निशाना बनाकर किया गया विस्फोट; 2000 में राजस्थान के अजमेर में दुर्गा के सुमी मंदिर में एक विस्फोट; और 2007 में आंध्र प्रदेश के हैदराबाद में एक मस्जिद में विस्फोट। संयुक्त रूप से, इन पांच हमलों में कम से कम 126 नागरिक मारे गए, जिनमें ज्यादातर मुसलमान थे। लेकिन अंत में हाल ही में दो हजार मौलबी-उलेमा-इमाम ने कहा कि इस्लाम आतंकवाद को स्वीकार नहीं करता और जिहाद का आतंकवाद से कोई लेना-देना नहीं है। इसलिए आतंकवादी वास्तव में इस्लाम विरोधी हैं। लेकिन मुस्लिम धर्मगुरुओं ने महसूस किया है कि हिंदुत्व के अनुयायियों के लिए आत्मनिरीक्षण का समय आ गया है ।

• संदर्भ :

1. Das, Ananya. "Former Mumbai Top Cop Unmasks Pakistans Conspiracy of Projecting 2611 Terror Attack as Hindu Terrorism." *Zee News*, 18 Feb. 2020, zeenews.india.com/india/former-mumbai-top-cop-rakesh-maria-unmasks-pakistans-conspiracy-of-projecting-26/11-mumbai-terror-attack-as-hindu-terrorism-2264809.html.
2. Jaffrelot, Christophe. *Hindu Nationalism: A Reader*. Princeton UP, 2007.
3. Joshy, P., and K. Seethi. *State and Civil Society Under Siege: Hindutva, Security and Militarism in India*. First, SAGE Publications Pvt. Ltd, 2015.

*Corresponding Author: धीरजसाव, एम.ए. ,

4. Mishra, Awadhesh. "किताब 'हिंदू टेरर' ने खोला हिंदू आतंक के बीज बोने वालों का राज!" *India Speaks Daily*, 6 June 2018, www.indiaspeaksdaily.com/the-book-hindu-terror-disclosed-the-secret-who-sowing-seeds-of-hindu-terror.
5. Noorani, A. *Savarkar and Hindutva - the Godse Connection*. LeftWord, 2022.
6. Ramachandran, Sudha. "Hindutva Terrorism in India." *The Diplomat*, 5 Feb. 2020, thediplomat.com/2017/07/hindutva-terrorism-in-india.
7. ---. "Hindutva Terrorism in India." *The Diplomat*, 5 Feb. 2020, thediplomat.com/2017/07/hindutva-terrorism-in-india.
8. Shani, Ornit. *Communalism, Caste and Hindu Nationalism: The Violence in Gujarat*. 1st ed., Cambridge UP, 2007.
9. Singh, Akhilesh. "Inaugurating Project 2024? PM Modi Showcases Promises Fulfilled." *The Economic Times*, 8 Sept. 2022, economictimes.indiatimes.com/news/politics-and-nation/inaugurating-project-2024-pm-modi-showcases-promises-fulfilled/articleshow/94071574.cms?from=mdr.
10. ---. "Inaugurating Project 2024? PM Modi Showcases Promises Fulfilled." *The Economic Times*, 8 Sept. 2022, economictimes.indiatimes.com/news/politics-and-nation/inaugurating-project-2024-pm-modi-showcases-promises-fulfilled/articleshow/94071574.cms?from=mdr.
11. Swami, Praveen. "India's Turned a Blind Right Eye to Hindutva Violence, but It Can Be a Threat to State Itself." *ThePrint*, 17 Apr. 2022, theprint.in/opinion/security-code/indias-turned-a-blind-right-eye-to-hindutva-violence-but-it-can-be-a-threat-to-state-itself/918092/#google_vignette.
12. *স ন্ত্রা স : গৈরিক সন্ত্রাসবাদ! সন্ত্রাসবাদীদের কোনও ধর্ম হয় না, ভোটের দিকে তাকিয়ে এই কান্ডজ্ঞানটুকুহারিয়ে ফেলেছেন নেতারা – মাসিক আলকাউসার* . www.alkawsar.com/bn/article/1443. Accessed 19 Sept. 2022.